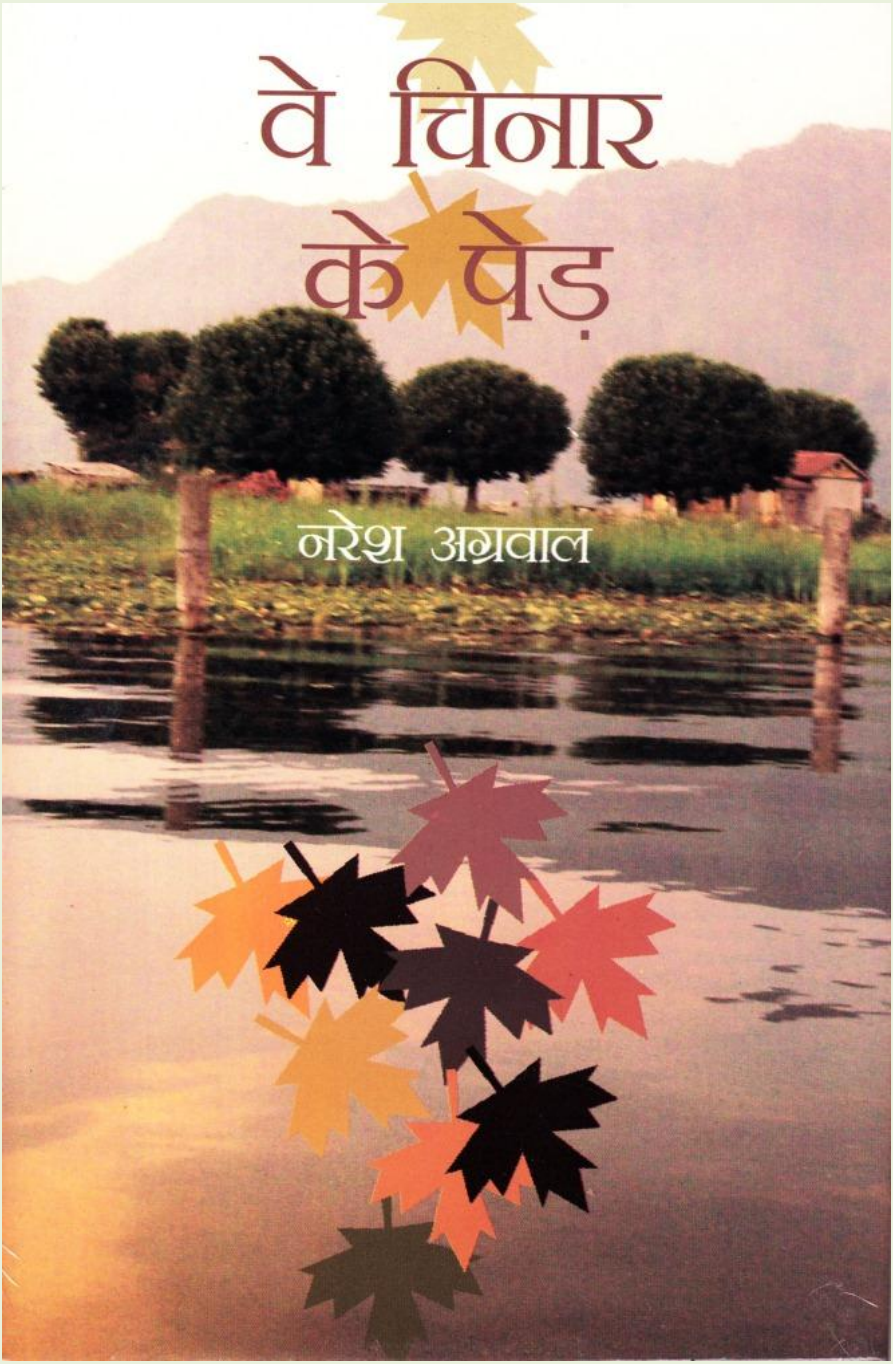
वे चिनार
के पेड़
नरेश अग्रवाल

वे चिनार के पेड़

(कश्मीर की कविताएँ)

डॉ. नरेश अग्रवाल

सर्वाधिकार सुरक्षित – डॉ. नरेश अग्रवाल

इस 'ई–पुस्तक' का प्रकाशन डॉ. नरेश अग्रवाल द्वारा स्वयं किया गया है।

पुस्तक के रूप में इसका प्रकाशन– प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, द्वारा सन् 2006 में किया जा चुका है।

ISBN: 81-7714-261-5

ई–पुस्तक प्रकाशन वर्षः सन् 2014

प्रकाशन संस्थान
4715/21 दयानंद मार्ग, दरियागंज,
नई दिल्ली – 110002
फोनः 23253234,
65283371

डॉ. नरेश अग्रवाल-एक परिचय

''नरेश का मिजाज एक चिन्तक का है, वे जीवनानुभवों की गहराई में उतरने का माद्दा रखते हैं।'' – इंडिया टुडे

1 सितम्बर 1960 को जमशेदपुर में जन्म।

अब तक स्तरीय साहित्यिक कविताओं की 6 पुस्तकों का प्रकाशन तथा शिक्षा सम्बन्धित 6 पुस्तकों का प्रकाशन। साहित्य जगत में रचित पुस्तकों को अच्छी ख्याति प्राप्त। 'इंडिया टुडे' एवं 'आउटलुक' जैसी पत्रिकाओं में भी इनकी समीक्षाएँ एवं कविताएँ छपी हैं। देश की सर्वोच्च साहित्यिक पत्रिका 'आलोचना' में भी इनकी कविताओं को स्थान मिला। लगभग सारी स्तरीय साहित्यिक पत्रिकाओं में कविताएँ प्रकाशित।

'मरुधर' रंगीन द्विमासिक साहित्यिक पत्रिका का सम्पादन पिछले चार वर्षों से लगातार कर रहे हैं, जो आर्ट पेपर पर छपती है।

सन् 2014 में सूक्तियों पर 'सूक्ति-सागर' नाम से एक पुस्तक लिखी, जो भारतवर्ष में संभवतः यह पहला प्रयास होगा

जब किसी लेखक द्वारा स्तरीय 1000 सूक्तियाँ हिन्दी भाषा में लिखी गयी।

'हिंदी सेवी सम्मान', 'समाज रत्न' सम्मान, अक्षर–कुंभ सम्मान आदि अनेक सम्मानों से सम्मानित।

पौधों की बोनसाई विद्या में पूर्ण रुप से पारंगत तथा हजारों दुर्लभ पौधे इनके संग्रह में शामिल। बोनसाई में अनेक पुरस्कार मिले।

शतरंज, ज्योतिष, हस्त रेखा एवं होम्योपैथी में कई साल तक विस्तृत अध्ययन।
लगभग 5000 पुस्तकें इनके निजी पुस्तकालय में संग्रहीत हैं।

फोटोग्राफी विद्या में पूर्ण रुप से दक्ष तथा अपने भ्रमण के दौरान हजारों तस्वीर का संग्रह इनके बेवसाईट पर उपलब्ध हैं।
यात्रा के बेहद शौकीन तथा अनगिनत जगहों की यात्रा की।

सम्पर्क –
रेखी मेन्शन, 8 डायगनल रोड, बिष्टुपुर, जमशेदपुर–831001
दूरभाष – 9334825981, 7488504892
ई. मेल – **smcjsr77@gmail.com**
बेवसाईट : **www.nareshagarwala.com**

आत्मकथन

जब तक शब्द अक्षर थे वे चुपचाप थे, परन्तु जब वे चित्र बने, चलने लगे। एक सधी हुई कलम से सारा काव्य चित्रमय हो जाता है। घटनाएँ काल्पनिक न होकर एक जीती–जागती प्रस्तुति बन जाती हैं। वे सारे प्रतीक और उपमाएँ अपने पंख फड़फड़ाने लगती हैं, और जब समाप्त होता है कथन तो लगता है कुछ रहस्यमय उतर आया है हृदय में, वह भी बिना अनुमति के। इसी तरह के अनुभवों से सरोकार हो पाठक का, यही सोचकर इन कविताओं की रचना की गयी है।

अन्त में बस इतना कहना चाहूँगा–
लोग उलझे रहेंगे।
शताब्दी के नये–नये कारनामों में
हर दिन नयी चीजें उपलब्ध होंगी
उनके हाथों में
फिर भी मेरी कविताओं,
तुम्हें कोई संघर्ष नहीं करना पड़ेगा,
रखा जाएगा हाथों में जब भी तुम्हें
अँगुलियाँ पन्ने पलटने लगेंगी।

–डॉ. नरेश अग्रवाल

पूर्व लिखित पुस्तकों पर सम्मतियाँ

''नरेश का मिजाज एक चिन्तक का है, वे जीवनानुभवों की गहराई में उतरने का माद्दा रखते हैं।''
– इंडिया टुडे

''सब कुछ को सलीके से छिपाकर वे अपने पाठक को सरल से सरल भाषा में दृश्य–दर–दृश्य, कुछ अनसुने, अनदेखे और अनजाने को सुनने, देखने और जानने के लिये उकसाते हैं। इसलिए उस मर्म और तत्त्व को ढूँढ़ते हुए, वहाँ तक पहुँचने की प्रक्रिया में वे पाठक को खोजकर पाने के सुख से सुखी कर देना चाहते हैं। उसे अपने ढंग से अपने लिए पाकर पाठक के मन में उसके विस्तार और उसके प्रदर्शन की सबसे ज्यादा सम्भावना बनती है।''
लीलाधर जगूड़ी
(पद्मश्री एवं साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित)

''ये कविताएँ हृदय का उद्गार हैं, हृदय की बात है। प्रभविष्णु कविचित्त पर जीवन के प्रसंगों ने जो तरंगें उत्पन्न की, उनकी अक्षत अभिव्यक्ति सरल–सुगम भाषा में कवि का अभीष्ट है। ये जीवन–प्रसंग जाने–पहचाने, रोज–ब–रोज के होते हुए भी एक विस्तृत सामाजिक–सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत होकर नया अर्थ ग्रहण करते हैं।''
– अरुण कमल, कवि एवं सम्पादक

''नये घर में प्रवेश, नये घर में प्रवेश नहीं, कवि का अपनी अन्तश्चेतना की चौखटों को पारकर अपने आप को पाने, खोजने का प्रयत्न हे। गहन आत्मविश्लेषणात्मक है कवि का दृष्टि। दुनिया के सारे कुएँ से लेकर–कई कविताएँ।''
–चित्रा मुद्गल, उपन्यासकार

''श्री नरेश अग्रवाल की इन कविताओं में समय और परिवेश के प्रति कवि की विनम्रता आकर्षित करती है। इनमें किसी प्रकार का भावुक आवेश या आक्रामक उबाल नहीं है, न अनुभव और भाषा की स्फीति। अभिव्यक्ति का यह अनुशासन इन कविताओं को प्रौढ़ और चिन्तनपरक बनाता है।''
–श्री विश्वनाथ तिवारी
कवि एवं सम्पादक, दस्तावेज

''आपकी सृजनात्मकता ने नये धरातलों को स्पर्श किया है। अपने आसपास के जीवन से यह संलग्नता इनकी एक विशिष्ट पहचान बनाती है। संवेदनात्मक गहराई में डूबी हुई इन कविताओं को पढ़कर बहुत अच्छा लगा। आपकी मार्मिकता मन को छूती है।''
– विजय कुमार, कवि एवं आलोचक

''आपकी प्रकृति आधारित कविताएँ भी मात्र दृश्यचित्र नहीं हैं, उनमें मन बोलता है। कश्मीर को आपने सैरगाह की जगह संवेदना बनाया है। अगर इन पुस्तकों का वितरण ठीक प्रकार से किया जाए तो ये समाज के लिये उपयोगी सिद्ध होंगी।''
– ममता कालिया, साहित्यकार

''आपकी कविताओं में बड़ी सहजता है। अनुभवों का निर्व्याज आवेग है। बड़ी आत्मीय स्वतः स्फूर्तता है।''
– विजेन्द्र, कवि एवं सम्पादक

''श्री नरेश अग्रवाल को वह दृष्टि प्राप्त है, जिस पैनी दृष्टि से कोई अपने चतुर्दिक का पर्यवेक्षण कर पाता है।''

–श्रवण कुमार गोस्वामी
पूर्व सदस्य, हिन्दी सलाहकार समिति
गृह मन्त्रालय, भारत सरकार

विषय-सूची

वे चिनार के पेड़	11
जो छोड़ गए हैं अपना बसेरा	12
अनुभूतियाँ	13
एक शाम	14
यहाँ की दुनिया	15
यहाँ की सुबह	16
सबसे अधिक ऊँचाई पर	18
छड़ी	19
वे जानते हैं	20
हमारे पीछे-पीछे	21
एक यात्री	22
चारों तरफ	23
चीजें जो बार-बार मेरे पास आती हैं	24
ढूँढ़ता हूँ मैं उन पेड़ों को	26
चरवाहा	27
यहाँ के दृश्य	28
फूलो से लदी नाव	29
कैमरा कैद नहीं कर पाया जिन्हें	30
दोनों किनारों के बीच यात्रा	31
जो तुम देखना भूल गए	32
घोड़ें	33
सब कुछ मौन है	34
भाषा	35
सबसे ऊँचाई पर एक रात	36

चढ़ते–चढ़ते 38
वापसी की इच्छा 39
सामने वाले पहाड़ों पर 41

❑❑❑

वे चिनार के पेड़

वे चिनार के पेड़, एक साथ चार की संख्या में
जैसे एक परिवार और उन पर ढ़लते हुए सूर्य की रोशनी
अभी दूर थे हम उनसे
लेकिन कितना अधिक था
उनके पास जाने का मोह
वे काले-काले तने विशाल कद में
लदे हुए हरे-हरे पत्तों से
जैसे कई शक्तिशाली पुरुष खड़े हों एक साथ
कहीं भी देखो
आँखें फिर उनकी तरफ खिंच जाती
उनकी जड़ें बड़े गोलाकार चबूतरे सी
एक-दूसरे से मिली हुई
झील का पानी उनके समतल बहता हुआ
और सामने बादल सघन
कुहासे से सारा आकाश ढ़के हुए
हम जल्दी से जल्दी पहुँचना चाहते थे इन पेड़ों तक
बैठना चाहते थे कुछ देर उनके पास
और अचानक बारिश इतनी तेज
पहुँच गयी नाव वापस दूसरे किनारे पर
सारा मोह भंग हो गया एकाएक
हम भी भींग रहे थे और साथ-साथ वे पेड़ भी
जो लग रहे थे पहले से अधिक खूबसूरत।

❑❑❑

जो छोड़ गए हैं अपना बसेरा

पत्ते नहीं हों जिस पेड़ में
केवल फूल ही फूल
आकाशा की ओर खिले हुए
उन टहनियों का रंग मेरा है
मटमैला मिट्टी सा
और यहाँ मिट्टी कहीं भी नहीं है
सब कुछ बदल गया है हरियाली में
रात में ओस के बदले बर्फ का गिरना देखता हूँ
दिन में इनका धीरे–धीरे पिघलना
और शाम को उस लड़की का
गाने के लिए किया जा रहा रियाज पहाड़ी पर
दूर कहीं बहुत सारे घरों से आती है ऐसी आवाज
और अब कबूतर भी वापस लौटने लगे हैं
शाम को घिरते देखकर
उनकी उड़ान से उठती है शुभ हवा
हजरतबल पर अपने को न्योछावर करती हुई।
जो गये हैं यहाँ, उनका मन नहीं होता लौटने का
इन सारे दृश्यों को देखकर
और जो पहले से थे यहाँ
फिर मजबूरीवश छोड़कर गए अपना बसेरा
दुख होता है उन्हें यहाँ पर न देख पाने का।

❑❑❑

अनुभूतियाँ

सचमुच हमारी अनुभूतियाँ
नाव के चप्पू की तरह बदल जाती हैं हर पल
लगता है पानी सारे द्वार खोल रहा है खुशियों के
चीजें त्वरा के साथ आ रही हैं जा रही हैं
गाने की मधुर स्वर लहरियाँ गूँजती हुई रेडियो से
मानो ये झील के भीतर से ही आ रही हों
हम पानी के साथ बिलकुल साथ–साथ
और नाव को धीरे–धीरे बढ़ाता हुआ नाविक
मिला रहा है गाने के स्वर के साथ अपना स्वर
और हम खो चुके हैं पूरी तरह से,
यहाँ की सुन्दरता के साथ।

❑❑❑

एक शाम

यह शाम का मौसम है
सभी चीजें अलग–अलग रूप से दिखाई देती हुई
सामने बोट हाउस की लंबी कतारें
उनमें रहने का सुख जैसे हम इस झील के साथ हैं
और इस झील में शायद पचासों नावें होंगी
सैलानियों को सुखद अनुभूतियाँ दिलाती हुईं
हर पल शाम जैसे हाथ छुड़ा रही हो हम लोगों से
तब तक हम थोड़ी दूरी और तय कर लेते थे
देखता हूँ ये सारे दृश्य गर्व से भरे हुए
उनमें ताकत है हमें सुख देने की
बस हमें उन्हें समर्पित करना भर है अपने आपको।

❑❑❑

यहाँ की दुनिया

बच्चा अभी-अभी स्कूल से लौटा है
खड़ा है किनारे पर
चेहरे पर भूख की रेखाएँ
और बाहों में माँ के लिए तड़प।
माँ आ रही हैं झील के उस पार से
अपनी निजी नाव खेती हुई
चप्पू हिलाता है नाव को
हर पल वह दो कदम आगे बढ़ रही
बच्चा सामने है
दोनों की आँखें जुड़ी हुई
खुशी से हिलती है झील
हवा सरकती है धीरे-धीरे
किसी ने किसी को पुकारा नहीं
वे दोनों निकल चले आये ठीक समय पर
यही है यहाँ की दुनिया।

❑❑❑

यहाँ की सुबह

चारों तरफ पहाड़ हैं और बीच में झील का हिलना
सूरज उग रहा है इसमें से
उठ रहा है धीरे-धीरे उस किनारे की ओर से
थोड़ी देर में बीचों-बीच
इसके साथ-साथ ही
शुरू हो जाती है यहाँ के लोगों की सुबह
नाविकों ने अपनी नाव खोल ली है
मवेशी चराने वाले निकल पड़े हैं भेड़ों को लिये टीलों पर
घोड़ा तैयार है सवारी के लिए
और नाश्ते का अंतिम कौर मेज पर
सभी को लगभग दूर-दूर तक चलना होता है
वे देखते हैं अपने चुस्त जूतों की तरफ
और इस महल का शानदार स्वरूप
देखते-देखते पूरी तरह से प्रतिबिम्बित हो गया है जल में।
आस-पास के बाग-बगीचे भी छोड़ने लगे हैं धरती का जल
अपने गोल-गोल फव्वारों से।
फूल से लदी डालियों को तलाश है
किसी सुन्दर चेहरे की
और अधिक रफ्तार की जरूरत नहीं
सब कुछ धीरे-धीरे चलता है यहाँ
हम जितने गति शून्य हों उतने ही इनमें डूबे हुए
कब धूप और कब छाया कुछ भी पता नहीं चलता
सूरज फिर से लौट आया है झील में

अपनी सुबह की मुद्रा में
शांत झील में दिखाई देता है
उसका डूबता हुआ मस्तक
और चारों तरफ से पक्षियों का पेड़ पर लौटना
अब जहाँ भी कदम बढ़ायें अंधकार पर ही पड़ते हैं ।

❑❑❑

सबसे अधिक ऊँचाई पर

हमने अनगिनत सीढ़ियाँ पार की होंगी
और अब हम सबसे अधिक ऊँचाई पर हैं
यहाँ से दिखलाई देता है
पूरा का पूरा शहर एक साथ
जितना हमने सोचा था उससे बहुत बड़ा
सामने की सड़क पर सबसे अधिक आवाजाही है
घरों में छतें कहीं कंक्रीट की हैं तो कहीं टीन की
और उस बड़ी झील पर भी
बना लिये हैं लोगों ने घर
जिससे छोटी हो गयी है झील
फिर भी काफी जगह बची है
जिन पर चल रहे हैं शिकारे
सैलानियों को मस्ती भरी सैर कराते हुए
उन पहाड़ों की ओर भी खड़ी हैं बहुत सी नावें
लोगों का इंतजार करती हुई
और सूरज डूब रहा है धीरे-धीरे
मानो इस झील में ही
जिसके रंग से रंगीन हो गयी है सारी झील

❑❑❑

छड़ी

पहाड़ पर एक छड़ी मिल जाए तो
हम भी पार कर सकते हैं ऊँचाइयाँ
ऐसा कहते हैं यात्री
और इसे हाथों में थामे निकल पड़ते हैं वे।
अब दो नहीं तीन पाँव हैं उनके पास
लड़ने के लिए मुश्किल रास्तों से।
चारों तरफ कड़कती ठंड
और उनसे लड़ने के लिए
चढ़ाई पर चढ़ने से प्राप्त हुई गर्मी।
सुबह से शाम तक यूँ ही चलते रहना है
हर रोज बारह किलोमीटर
लगातार तीन दिनों तक
उसके बाद होंगे बाबाजी के दर्शन
ठंडे देश के बाबाजी भी बर्फ से बने हुए
उनके दर्शन और सारी थकान खत्म
पूरा हुआ एक बड़ा उद्देश्य जिन्दगी का
लौट रहे हैं वे अब घर
छड़ी कहाँ छूट गयी है किसी को याद भी नहीं।

❑❑❑

वे जानते है

बरसों से वही पहनावा
वही चाल–ढ़ाल
एक ही लय।
गुजरना सिर्फ जाने–पहचाने रास्तों से
उतरना और चढ़ना पहाड़ों पर
और हँसी भी छोटी सी
उनकी छोटी सी दुनिया की तरह।
वे जानते हैं
उनके चारों ओर खूबसूरत जगह है
वे भी इस खूबसूरती का एक हिस्सा हैं
लेकिन कभी दूर तक टहलने नहीं निकलते
न ही कभी बहुत दूर गए अपनी जगह को छोड़कर।
जो पहाड़ियों में बसे हैं उन्हें झीलें बुलाती हैं
और जो झील में उन्हें बगीचे।
सुन्दर पेड़ों की तरह इनकी जिन्दगी
पत्ते हिलने भर जितनी दौड़
फिर भी सुखद आत्मा हैं वे
तृप्त सारे आकाश को देखकर

❑❑❑

हमारे पीछे-पीछे

यह एक खूबसूरत जगह है
खुशियों का एक-एक क्षण हमारे पास आ रहा है
जैसे हमें तृप्त करने
नाव पर सवार हुए तो
यह इतनी आरामदेह लगी
जैसे पानी को बिना छुए
पानी पर ही विश्राम कर रहे हों
बहता है यहाँ पानी धीरे-धीरे
एक चिरस्मरणीय मुद्रा में
हम भी साथ-साथ
और दूर से सुन्दर दिखने वाली हर चीज के पास
पहुँचते जा रहें हैं हम धीरे-धीरे
कभी किसी को छुआ तो कभी किसी को
इस तरह से सारी दिशाओं को
और जब वापस लौटने लगे
लगा सब कुछ आ रहा है हमारे पीछे-पीछे।

❑❑❑

एक यात्री

शायद थोड़ा-थोड़ा करके
सबको जान सकते हैं हम
उनकी तस्वीरों से वहाँ की धरती का अंदाजा लगा सकते हैं
फिर उनमें से सबसे खूबसूरत को चुन सकते हैं
और कर सकते हैं वहाँ की सैर।
इस तरह घूमना भी मनपसंद अजादी है
बस लगता है हरी घास पर बढ़ते जा रहे हैं
और उम्मीद है जो सामने धरती के शिथिल टुकड़े हैं
उन पर भी फूल खिलेंगे एक न एक दिन
हम बढ़ते हैं तो कितनी सारी दूरियों को
साथ बाँध कर चलते हैं
कोई परवाह नहीं जंगल में शेर मिले या न मिले
पक्षियों की उड़ान तो देख ली
और अनेक बार ये छोटी-छोटी झीलें भी
समुन्दर से अधिक प्यारी लगती हैं।
बच्चों की तरह उत्साह मन के भीतर
बस बादलों को किसी तरह हाथ से छू ले
या गोले बनाकर खेलते रहें बर्फ से।
तिनके भी यहाँ जरूरत की चीज
थोड़ी देर इन्हें जलाकर ताप सकते हैं हम
फिर तो निद्रा में
और ताजगी सुबह की
दिखलाती है हमें राह फिर से किसी नये प्रदेश की। ❑❑❑

चारों तरफ

धूप कम होती है दृश्य छाया में बदल जाते हैं
धूप बढ़ती है दृश्य प्रकाश में
हम बढ़ रहे हैं आगे और दाहिनी तरफ
जहाँ घास की चादर हैं लेकिन समतल नहीं
अपने में उठान और ढ़लान लेते हुए
बीच–बीच में छोटे–छोटे घर और उनके साथ पेड़
और किनारे–किनारे फूल अपनी खुशबू छोड़ते हुए
कोई व्यक्ति दिखाई नहीं दिया यहाँ
चारों तरफ केवल सौन्दर्य ही सौन्दर्य
और उसे निहारने वाला एकमात्र मैं।

❑❑❑

चीजें जो बार-बार मेरे पास आती हैं

हर जगह की मिट्टी अलग-अलग होती है
और वहाँ के खूबसूरत धरती-चित्र भी
सभी की एक सीमा होती है
जिसमें समा जाते हैं हमारे सारे अनुभव
एक डाली भी झुकी हुई
दे जाती है अद्‌भुत आकार एक चित्र को
और घर से निकलता धुआँ
जैसे बहुत बड़ी घटना घट रही है यहाँ
मैं चरवाहे से नहीं पूछता तुम क्या कर रहे हो
न ही पानी भरती औरतों से कुछ
सभी जानते हैं
ऊबड़-खाबड़ जमीन में चलने में दिक्कत होती ही है।
समय बिना काम किये हुए गुजरे तो वह भार है।
यहाँ पर जो कुछ भी है
बार-बार वह अपनी सीमा तोड़कर मेरे पास आता है
शाम के बाद मिट्टी की दुनिया खामोश हो जाती है
लेकिन विचारों की नहीं।
मेरे इस चाय के प्याले में तैरती है वह झील
पास ही सेब का पड़े हैं दो-चार
जो बाद में खाये जाएँगे
ये पत्ते हों या वे फूल
सभी तो अपने आप याद आते हैं
और इस जीवन से

कितना चुप चाप निकल गया था मैं
बाद में ही इसका एहसास हुआ था।

❑❑❑

ढूँढ़ता हूँ मैं उन पेड़ों को

जंगलों को छोड़ आने के बाद
सपाट रास्ते बचे रहेंगे हमारे पास
चारों तरफ समतल मैदान
और ढूँढ़ता हूँ मैं उन पेड़ों को
जिनकी टहनियाँ कभी गंदी नहीं होतीं
धुल जाती है हर शाम बारिश से
उनके पत्ते कभी सूखते नहीं हैं
क्योंकि उनमें रस अधिक है और वहाँ धूप कम
वे हरे-भरे हैं लगातार खड़े
कहीं भी झुकाव नहीं
बर्फ उन पर गिरती है
और लटकती है श्रृंगार की तरह
पानी के लिए आस-पास नदी है एवं झरने
एक पक्षी की पुकार को भी
आत्मसात् कर लेता है पूरा प्रदेश
और याद है मुझे
आकर यहाँ कितना शांत हो गया था मैं
कुछ भी बचा नहीं था कहने को किसी से।

❑❑❑

चरवाहा

इतनी सारी भेड़ें हैं यहाँ
जिन्हें इत्मीनान से हाँक रहा है चरवाहा
और जमीन समतल नहीं, कहीं पर भी
या तो चढ़ना है या तो उतरना।
हल्की-हल्की धूप पेड़ों के घेरे से
भीतर प्रवेश करती हुई
जिसमें सुनहरी नजर आती है
भेड़ों की खाल बालों से भरी-भरी
वे दौड़ती हैं इधर उधर
अपनी शोभा बिखेरती हुई।
जल्दी ही सर्दियाँ खत्म होने को हैं
गरमी से हल्के-हल्के पीले हो रहे हैं पत्ते
कुछ ही दिनों में ये सुनहरे बाल काट दिए जाएँगें
जिनके ऊन से बुन रही होंगी स्वेटर
घर में बैठी औरतें
चरवाहा होगा अपनी ही जगह पर
कम से कम कपड़ों में
भेड़े भी उसी तरह
चारों तरफ से आती है तेज रोशनी
लेकिन घास पहले से बहुत अधिक।

❑❑❑

यहाँ के दृश्य

यहाँ दृश्य टुकड़ों–टुकड़ों में बिखरे हुए हैं
एक–एक कण सभी को समर्पित
थोड़े से बादल हटते हैं
दृश्य कुछ और हो जाता है
हवा चलती है जैसे हम सभी को
एक साथ समेट लेने को
मन में इच्छा होती है वैसी आँखें मिल जाएँ
जो सब कुछ ले जाएँ अपनी झोली में।
थोड़ी सी तस्वीरें खींची हुई मेरे पास
एक पेड़ की डालियों जितनी भर
और यहाँ तो हर क्षण
कहीं भी जा सकते हैं आप दूर–दूर तक
वो भी पलक झपकाये बिना
और भूल जाते हैं हम
किस दूल्हन का मुखड़ा ढूँढ़ रहे हैं हम यहाँ।

❑❑❑

फूलों से लदी नाव

वो रंग-बिरंगे फूलों से लदी हुई नाव
सामने से गुजर रही थी
उसके नाविक ने हमें देखा तक नहीं
हम अपनी दुनिया में मग्न
नहीं थे इन फूलों के खरीददार
और वो ले जा रहा था इन्हें बेचने
या सजाने किन्हीं बंगलों में
यह नाव नहीं थी कोई साधारण
लग रही थी फूलों का एक गुलदस्ता
जो धीरे-धीरे आगे बढ़ता हुआ
कुछ देर जो हमारे बगल में सज कर रहा
अब सारी झील के बीच से गुजरता हुआ
उसके नाविक की सफेद वेषभूषा
बादल भी आज वैसे ही घने सफेद
जिनकी छाया का लिबास पहने झील
और झील की मेज पर रखे हुए ये फूल
जैसे हम मिट्टी पर नहीं पानी के घर में हों।

❑❑❑

कैमरा कैद नहीं कर पाया जिन्हें

कुछ न कुछ छूट रहा था हमसे–
एक जगह जीवन है अपने सघन आकार में
जहाँ वह औरत बैठी है गेहूँ चुनती हुई
पास ही उसका बच्चा है
जमीन में लोटता हुआ
जो उसके पास तक पहुँचना चाहता है
उसकी भूख की तड़प और गेहूँ में कंकड़
माँ का ध्यान है दोनों तरफ
और यह घर है लकड़ी का बना हुआ
एक झील की सतह पर
जिसके किनारे पर कुछ पेड़ हैं
दूर से दिखती है पहाड़ों की श्रेणियाँ
वहाँ से उसका पति आ रहा है
साइकिल में उसकी थकान दिखती है
जोर–जोर से हिलते हुए उसके पाँव
घर में उसका खाना पहले ही तैयार है
हाथ–मुँह धोकर वह खाने बैठा है
औरत का ध्यान सब पर
लेकिन कैमरा कैद नहीं कर पाया इन चीजों को
केवल शब्द ही व्यक्त कर सकते थे इन्हें।

❑❑❑

दोनों किनारों के बीच यात्रा

दोनों किनारों पर बर्फ जमी है
बीच में ठंडा पानी बहता हुआ
एक नाव है छोटी सी जिस पर हम सवार
धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए
धीरे-धीरे पेड़ों की सघनता घटती हुई
और पहले से तेज दिखाई देती है चाँद की रोशनी
आस-पास सब कुछ सफेद है यहाँ
दूरियाँ उलझी हुई छाया की तरह
ठंड से ठिठुरते हैं पाँव
नाव को कोई फर्क नहीं
एक आवाज पानी के बहने की
दूसरी हमारी साँसों की
किनारे बिल्कुल चुपचाप
सामने चारों तरफ पहाड़ ही पहाड़
जैसे हमें पहुँचना है वहाँ तक
इस पतली सी नदी का विस्तार दूर तक
लेकिन थक जाएँगे हम
रुक कर फिर यात्रा शुरू करेंगे कल।

❑❑❑

जो तुम देखना भूल गए

हम अजनबी हैं यहाँ के लिए
और हम तो वो देखेंगे
जो तुम देखना भूल गए अपने ही देश का
हर दिन एक नयी छाया पाओगे हमारे चेहरे पर
हर बार जैसे हमें कोई नया खजाना मिला।
सारे जंगल एक से नहीं होते
और न ही पर्वत और नदियाँ
हम चलना चाहते हैं पेड़ों के साथ
कदम से कदम मिलाते हुए
हम भूल जाना चाहते हैं दूरियों को ।
इन सारे पुराने आकारों से
निकलते हैं नये–नये आकार
ये बेड़ी की तरह हमें बाँध देते हैं
वे हमें जाने नहीं देंगे
हम कितने खुश हैं यहाँ
यह बार–बार याद दिलाती है यहाँ की हवा
मौसम बदलता है जैसे हमारी आँखों का जादू
जब तक सोचते हैं बारिश में भींगे
धूप चली आती है
जब तक धूप को देखें कुहासा सामने
और तुम लोग कहाँ खड़े होंगे
हमें तो याद भी नहीं।

❑❑❑

घोड़ें

जहाँ पर आँखें नहीं पहुँच पायेंगी
घोड़े वहाँ तक हमें ले जाएँगे
इन पर हम सवार
लेकिन लगाम इसके मालिक के पास
उसी की ठोकर की दिशा में ये चलते हैं
जब ऊँचाई आए तो थोड़ा आगे की तरफ झुक जाओ
जब ढ़लान पीछे की तरफ
इसी तरह से सामंजस्य बनाये रखना होता है इनके साथ
और देखते–देखते कितनी सारी दूरियाँ तय कर ली हैं हमने
सामने नदी है और घोड़े को लगी है प्यास
थोड़ी देर हम यहीं रुक जाते हैं
धीरे–धीरे टहलते हैं
तब तक यह घोड़ा करेगा आराम
और उसके चुस्त होते ही यात्रा शुरू
घोड़े के मालिक की जिद है
वह हमें छोड़ेगा नहीं, दिखलायेगा यहां की सारी चीजें
हम थके हुए होने पर भी कर देते हैं आत्मसमर्पण, उसके आगे
और वापस लौटने पर
घोड़े के शरीर की गंध तक रह जाती है हमारे कपड़ों पर।

❑❑❑

सब कुछ मौन है

सुन्दर दृश्यों, चूमता हूँ मैं तुम्हें
और तुम खत्म नहीं होते कभी
थक जाता हूँ मैं
खत्म हो जाते हैं मेरे चुम्बन
कुहासा खोलता है दृश्य पर दृश्य
जैसे हम उनके पास जा रहे हों, लगातार
सारी खिड़कियाँ खुल गयी हैं मन की
इनमें सब कुछ समा लेने की इच्छा जागृत
कोई तेज घुड़सवार आ रहा है मेरी तरफ
और बड़ी मुश्किल से संभालता हूँ मैं अपने आपको
इस उबड़-खाबड़ जमीन से।
यहाँ पत्थरों में अभी भी हल्की बर्फ जमी हुई है
भेड़ों के लिए आजाद दुनिया, हरे-भरे मैदान की
गड़ेरिया अपनी पुरानी वेष-भूषा में टहलता हुआ
करता है आँखों से मुझे मौन सलाम
और सब कुछ मौन है यहाँ
फिर भी मुझसे बातें करता हुआ लगातार

❑❑❑

भाषा

उन्हें हमारी भाषा बोलते समय
सम्भल–सम्भल कर बोलना पड़ता था
फिर भी कई दिनों तक वे हमारे साथ रहे
और हमारे सवालों का जवाब देते रहे
वे जब चुप रहते थे
उनके लाल होठों में यहाँ की खुबसूरती दिखाई देती थी।
हम पके हुए सेब तोड़ना चाहते थे एक बगीचे से
उन्होंने ऐसा करने से मना किया
एक दो सेव के न रहने पर फर्क भी क्या पड़ता बगीचे को
लेकिन उन्होंने इशारे से बाजार का रास्ता दिखाया
हमारी भाषा और आग्रह में जो संवेदना थी
उसे न समझ पाने का हमें दुख हुआ।

❑❑❑

सबसे ऊँचाई पर एक रात

पहाड़ों के टीले में एक गाँव है
दूसरे और तीसरे टीलों में भी
सभी आपस में जुड़े हुए हैं देवदार के पेड़ों से
और सड़कें गोल भूलभुलैया की तरह
पहाड़ों की परिक्रमा करती हुईं
सबसे ऊँचाई पर भी समतल जमीन है
जहाँ एक झील है मछलियों से भरी पड़ी
उसके पास वाले मैदान में बैठना घंटों-घंटों तक
जैसे पूरी तरह से प्रकृति का दोस्त बन जाना है
हम सब बैठे हैं यहीं एक साथ
एक साथ हमारा खाना पीना
और हल्की पीली रोशनी
अस्त होते सूरज की, पहाड़ों के पीछे से आती हुई
कभी-कभी जोरों की ठंड लगती है
काँपने लगते हैं हमारे शरीर
मन करता है सिकुड़ जाएँ धरती के भीतर
दूर जल रही सिगड़ी आग की थोड़ी राहत देती है
इतनी ठंड के बावजूद लगता है
खुशनुमा है अनुभव यह
और नये किस्म का मौसम यहाँ
हम बातें करते जाते हैं लगातार
लेकिन आँखें गड़ाये रखते हैं तपती आग पर
गर्म और ठंड का यह अद्भुत मेल

दोनों जरूरी हैं हमारे लिए
जो यादो में टहलते रहते हैं कई दिनों तक
वापस लौट आने पर भी।

❑❑❑

चढ़ते-चढ़ते

हम ऊपर चढ़ते-चढ़ते थक गए थे
गाइड वैसा का वैसा ही
अभी थोड़ी दूर और चलें तो
खूबसूरती इससे कहीं अधिक
और फिर से जुटाते हैं हिम्मत और ताजगी
बढ़ते हैं उस ऊँची जगह की ओर
रखते हुए पाँव एक-एक पत्थर पर
बस यह अन्तिम छोर इस पहाड़ का
यहाँ से नीचे गहरी खाई दूर तक
जिसके बीचोंबीच पतली सी नदी बहती हुई
इस ओर चारों तरफ हरियाली है
बर्फ काफी दूर है अभी भी दूसरे पहाड़ों पर।
पक्षियों का एक सघन झुंड आया
और सर के ऊपर से उड़ गया
अब धीरे-धीरे सूर्य भी अस्त होने लगा है
चारों तरफ के पहाड़ रंग गए हैं सुनहरे रंग में
एक दीपक और उसका उजाला
सभी धीरे-धीरे अंधेरे में सिमटते हुए
और हमें जल्दी ही वापस लौटना है अपने स्थान पर।

❑❑❑

वापसी की इच्छा

इतनी जल्दी उठने की कोशिश करने पर भी
सुबह उठ नहीं पाये थे हम
अब देर हो गयी थी
जिसे हमें पाना था उसे खो दिया था
अब सूखे-सूखे से पहाड़
और गर्म तप्त झील
किसी में कोई रंग नहीं
क्या करेंगे उन्हें देखकर
अपना रास्ता दूसरी ओर कर लिया हमने
चारों तरफ बाजार की सरगर्मी
धीरे-धीरे भीड़ बढ़ती हुई
खरीददारी के लिए अनगिनत जगहें
फिर भी यहाँ रहने का मन नहीं करता
हर पल लगता है कोई बुला रहा है
इतने कोलाहल में भी उसी के स्वर
सभी चीजें फीकी यहाँ
वो स्तर जो हमें प्राप्त हुआ था
मन उसी ओर उठना चाहता है
वो उसी ओर जाना चाहता है
जैसे अपनी ठंडी-ठंडी बर्फ से हमें कोई छू रहा हो
हवा ने सुखद होकर मिजाज बदल दिया हो
और इतने बड़े-बड़े दृश्य
मेरे छोटे से हृदय में आकर मिलने लगते हैं

मैं आतुर हो चुका हूँ पूरी तरह से उनके पास जाने के लिए अब यहाँ अधिक देर तक रूकना कठिन हो रहा है।

❑❑❑

सामने वाले पहाड़ों पर

इन सामने वाले पहाड़ों में कोई हरियाली नहीं है
सारे हरे-भरे पहाड़ों के बीच कुछ अलग से लगते हैं ये
इनमें अधिक समय तक बर्फ टिकी रहती है
उस वक्त हरियाली के बीच
चाँदी के जेवरों की तरह नजर आते हैं ये
गर्मी आने पर इसका सारा पानी झील में उतर जाता है
और वे काले पत्थरों की तरह नजर आते हैं
कुहासे के वक्त इनका कालापन और सफेदी बादलो की
एक नयी तरह की भावभंगिमा व्यक्त करती है
जैसे बर्फ नहीं तो क्या हुआ
कुहासे ही तन को ढ़के हुए
मैं सिकारे में सैर करते हुए इन्हें देखता हूँ
उस वक्त हरियाली से भी अधिक खूबसूरत ये।

❑❑❑